School of ---*Humanities*

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " ------Research **Topic Yug Chetna in the Dramatic Work of Pro. Hari Datt S"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in(- ***Sanskrit*** Subject---) under school of (***humanities-***) of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year (2024-25

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / ***Dr. Vinod Kumar Gupta*** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Signatur) पूजा
(Name of Candidate)-**POOJA**
(En. No.)- **23010010**

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
(Signature)
(Name) **Dr.Vinod Kumar Gupta**
Faculty of (Subject – **Sanskrit**)

(Signature)
(Name)
(Director of Concerned School of Studies)

01/08/25

(Signature)
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

Format for Cover Page

(Approved Research Topic ----)

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY IN--- (Subject) ----Topic Yug Chetna in the Dramatic Work of Pro. Hari Datt Sharma : A Study "

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

(Name of Candidate)
En--Pooja

Under the Supervision of

Prof. /Dr. ----Vinod Kumar Gupta----------------------

Faculty of (Subject -Sanskrit)

पूजा

School of --------- *Humanities*

U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

ABSTRACT

संस्कृत साहित्य अत्यन्त विशाल एवं समृद्ध साहित्य है।दूसरे आधुनिक काल में भी साहित्य सर्जनाये सतत् प्रावधान है। स्वतन्त्र संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाओं में प्रो0 हरिदत्त शर्मा का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ आता है। इन्होने महाकाव्य, गीतकाव्य, नाट्यकाव्य,आदि विविध विधाओं में रचनाएँ की है, इनके सभी काव्यों में भ्रष्टाचार, अनैतिक कृत्य,सामाजिक कुरीतियाँ,देशभक्ति आदि से सम्बन्धित नाट्यकाव्य कविताएँ प्राप्त होती है। फलस्वरूप समकालीन उपयोगिता से नाट्य कृतियों में युगचेतना पर शोधकार्य करने की इच्छा हुई और विषय ''प्रो0 हरिदत्त शर्मा की नाट्य कृतियों में युगचेतना : एक अध्ययन'' पर शोधकार्य प्रस्तुत किया गया है।

Keywords:- नाट्य कृतियां, प्रो0हरिदत्त शर्मा युग चेतना, पात्र अभिनय,अध्ययन,दर्शक श्रोता,रूपक आदि।

पूजा

1. **(Introduction):-**

संस्कृत भाषा भारतीयों की प्राण भूत भाषा है। संस्कृत भाषा में ही उनका मनन चिन्तन, गवेषण और अनुभूति समन्वित है। इसका इतिहास कम से कम पाँच सहस्त्र वर्ष का है। वैदिक काल से लेकर आज तक इसकी अक्षुण्ण धारा प्रवाहित हो रही है। संस्कृत के विकृत रूप का नाम ही प्राकृत भाषा है। प्रकृति का अर्थ है– मूल भाषा अर्थात संस्कृत, उससे निकली हुई भाषा को प्राकृत भाषा कहते हैं। जन साधारण को भी प्रकृति कहते है अतएव जन साधारण द्वारा प्रयुक्त भाषा को प्राकृत कहते है। जन साधारण को भी प्रकृति कहते है। इसमें व्याकरण के नियमों आदि का पूर्णतया पालन न होकर नदी के धारा के प्रवाह के तुल्य जन जीवन में प्रयुक्त भाषा का अक्षुण्ण रूप रहता है।

भारत वर्ष का समस्त प्राचीन ज्ञान का भण्डार संस्कृत में ही है। भारतीयों के सभी धर्म ग्रन्थ, पुराण, रामायण, महाभारत स्मृति ग्रन्थ, दर्शन, धर्म शास्त्र, महाकाव्य, नाटक गद्य–काव्य, गीति–काव्य, आख्यान साहित्य, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, वास्तुकला, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, छन्दशास्त्र, और कोशग्रन्थ, संस्कृत में ही हैं। ज्ञान–विज्ञान का ऐसा कोई अंग नहीं है। जो संस्कृत भाषा में उपलब्ध न हो। यह प्राचीन ऋषि, महर्षियों, मनीषियों, कवियों, और तत्त्वज्ञों के अथक परिश्रम का ही फल है कि इतना विस्तृत वाङ्मय संस्कृत में उपलब्ध है।

इसी संस्कृत साहित्य को सजाने और संवारने का कार्य संस्कृत–विभाग इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय प्रयागराज में कार्यरत **प्रो0 हरिदत्त शर्मा** जी

पूजा

की कवि प्रतिभा से प्रस्फुटित शब्द रूपी मोती संस्कृत–साहित्य में नक्षत्र की भॉति देदीप्यमान हैं। इन्होनें गद्य–पद्य और नाटक आदि के माध्यम से आधुनिक काल में व्याप्त भ्रष्टाचार, आतंकवाद, दहेज प्रथा और साथ ही दूषित पर्यावरण पर भी अपनी लेखनी चलायी हैं, जैसे–

- **आक्रन्दनम्:**–कवि की यह नाट्यकृतियों एवं संस्कृत नाट्कों का संकलन है, जिसमें आतंकवाद से सम्बन्धित राज्य पंजाब जो सब जगह कर्फ्य से ग्रसित है। लोग इधर–उधर भाग कर अपनी जान की रक्षा कर रहे है। हर जगह तोप बारूद और गोले बरसाये जा रहे। इसका नायक गुरमीत है। जो मिल्खासिंह के हाथों गोली चलायी जाती हैं और वह मारा जाता है।

''एक न एक दिन भारत की अखण्ड शक्ति पृथक्तावादी तत्वों को विफल कर देगी'' कहते –कहते गुरमीत भूमि पर निष्प्राण हो गिर जाता है।''

- **त्रिपथगा:**–'त्रिपथगा' कवि की तीन नाटकों की संकलना है, जिसमें वधू–दहनम् में मध्यम वर्गीय गिरिनाथ की बड़ी बेटी प्रमिला के ससुराल का है, जो दहेज न लाने पर उसके सास–ससुर उसे सदैव कोसते रहते है। तथा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा कम होने से दुःखी रहते है। उधर प्रमिला का पति सर्वेश शारीरिक और मानसिक रूप से काफी प्रताड़ित करता है। अन्ततः उस महिला को आग की गोद में हमेशा–हमेशा के लिए चिर निद्रा में सोने के लिए विवश कर दिया जाता है।

- प्रो0 हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित नाटक त्रिपथगा आज भी समाज में भूसे में लगी आग की तरह सुलग रही है। इसमें दहेज प्रथा के दर्द एवं अर्थ

पूजा

की पीड़ा का विस्तार से वर्णन किया गया है। कि आज भी हमारे समाज एवं देश में हजारो लाखों बेटियों की बलि चढ़ायी जाती है। और इस कारण से समाज में बेटियों को हीन भावना से देखा जाता है। जो समाज के लिए घातक सिद्ध होता जा रहा है।

- प्रो0 हरिदत्त शर्मा ने 44 वर्ष तक अध्यापन कार्य किया और अन्त में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष भी रहे। इन्होंने 17 ग्रन्थों की रचना की, जिसमें प्रमुख है– गीत कंदलिका, उत्कलिका, बालगीताली, लसल्लतिका, त्रिपथगा, नवेक्षिका, आक्रन्दनम्, गुल्मिनी, सियामीयम्, वैदेशिकाटनम् आदि। प्रो0 हरिदत्त शर्मा को वर्ष 2015 में राष्ट्रपति द्वारा **'राष्ट्रपति सम्मान'** से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर शर्मा को साहित्य अकादमी, दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली, उ़त्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान **महर्षि व्यास पुरस्कार,कालिदास पुरस्कार तथा सर्वोच्च विश्वभारती पुरस्कार आदि** संस्थानों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। प्रो0 शर्मा ने संस्कृत–साहित्य की विविध विधाओं साहित्य सर्जनायें की हैं, जैसे– गीतकाव्य,नाट्यकाव्य,महाकाव्य आदि।

- आज भ्रष्टाचार, आतंकवाद, दहेज, अत्याचार, घूंसखोरी, आदि से समाज ग्रस्त है। प्रो0 शर्मा की नाट्यकृतियों में ये विषय पर्याप्त मात्रा में उपवृंहित हुए हैं, जिससे प्रभावित होकर मैंने 'प्रो0 हरिदत्त शर्मा की नाट्यकृतियों में युगचेतना : एक अध्ययन' विषय को अपने शोध–कार्य का विषय बनाया।

2. **(Literature Review):** प्रस्तावित शोध कार्य प्रो0 हरिदत्त शर्मा की नाट्यकृतियों में युग चेतना : एक अध्ययन इस विषय पर शोध सर्वेक्षण के

पूजा

माध्यम से यह पता चला कि पी–एच0डी0 उपाधि हेतु कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है।

अध्ययन की सार्थकता (Significance of the Study)

साहित्य समाज का दर्पण है क्योंकि समाज में घटित होने वाली घटनाओं का प्रतिविम्बन साहित्य में हुआ करता है। प्रो0 हरिदत्त शर्मा की कृतियों में पर्याप्त मात्रा में सामाजिक, राजनैतिक, आदि घटनायें उपवृंहित हुई है। इस कार्य से प्रो0 शर्मा की नाट्यकृतियों में युग चेतना : एक अध्ययन से विविध विषय समाज के सामने उपस्थित होंगे।

समस्या कथन/अनुसंधान का कथन (Statement of the Problem)

प्रो0 हरिदत्त शर्मा की नाट्यकृतियों में युग चेतना : एक अध्ययन।

3.(Description Broad Area):-

मेरे शोध कार्य में निम्न अध्याय होगें,जैसे–

- **प्रथम अध्याय–कवि का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व**
- **द्वितीय अध्याय–कवि की नाट्यकृतियों का प्रतिपाद्य–विषय**
- **तृतीय अध्याय–कवि के नाटकों में आतंकवाद सम्बन्धी युग चेतना**
- पंचनद–पीडनम्
- एकमेव रक्तम्

पूजा

- द्वेष–दंशनम्
- **चतुर्थ अध्याय– कवि के नाट्कों में भ्रष्टाचार सम्बन्धी युग चेतना**
- वृक–विकोशनम्
- साक्षात्कारीयम्
- **पंचम् अध्याय–कवि के नाट्कों में सामाजिक कुरीति (दहेज–प्रथा) सम्बन्धी युग चेतना**
- अबला–बलम्
- वधू–दहनम्
- **षष्ठ अध्याय–उपसंहार**

4.(Objectives of the Study):-

प्रो0 हरिदत्त शर्मा की नाट्यकृतियों में युग चेतना के किन–किन पक्षों का सन्निवेश हुआ है, उन पक्षों को समाज के सामने प्रकाशित करना शोध अध्ययन का उद्देश्य है।

5. (Research Methodology)

मैं निम्नलिखित शोधविधियों का उपयोग अपने शोध विषय पर करूंगी।

पूजा

- व्याख्यात्मक शोध / वर्णनात्मक / विवरणात्मक प्रविधि
- सर्वेक्षणात्मक शोध
- अन्त में कवि से सम्पर्क कर जानकारी संग्रह करना आदि समस्त अनुसंधान विधियों का प्रयोग करेंगे।

6. (Expected Outcome of the Research):-

नाट्यकृतियों के माध्यम से यदि समाज में फैली कुरीतियों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाय तो वर्तमान में बड़ी से बड़ी समस्या पर समाधान प्राप्त किया जा सकता ळें

(References):-

निम्नलिखित ग्रंथ हैं।

1. शर्मा .(डॉ0) हरिदत्त त्रिपथगा (संस्कृत–नाट्यसंकलन) एलनगंज इलाहाबाद .आञ्जनेय प्रकाशन .1987 .

2. शर्मा. (डॉ0) हरिदत्त आक्रन्दनम् (संस्कृत–नाट्यसंकलन) यूनिवर्सिटी प्रोफेसर्स कालोनी इंजीनियरिंग कालेज कैम्पस इलाहाबाद आञजनेय प्रकाशन .1998

3. शर्मा (डॉ) हरिदत्त गीतकन्दलिका (संस्कृत–गीतकाव्य) गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद .

पूजा

4. शर्मा. (डॉ0) हरिदत्त उत्कंलिका (संस्कृत–गीतिकाव्य) आञ्जनेय प्रकाशन इलाहाबाद

5. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त बालगीताली (संस्कृत–गीतिकाव्य) आञ्जनेय प्रकाशन इलाहाबाद

6. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त शर्मा लसल्लिका (संस्कृत–गीतिकाव्य) इलाहाबाद राका प्रकाशन।

7. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (सहलेखन) उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

8. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त नवेक्षिका (संस्कृत–गीतकाव्य) इलाहाबाद. राका प्रकाशन

9. शर्मा .(डॉ0) हरिदत्त वैदेशिकाटनम् (संस्क्त–महाकाल) नई दिल्ली राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

10. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त .महाकवि कालिदास : नाटक एवं नाट्यकला अध्याय संस्कृत–वाङ्मय का वृहद् इतिहास षष्ठ खण्ड–नाट्य लखनऊ उत्तर–प्रदेश संस्कृत संस्कृत संस्थान

11. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त गुल्मिनी (संस्कृत–गीतकाव्य) प्रयागराज राका प्रकाशन

12. शर्मा (डॉ0) हरिदत्त काव्यचन्द्रिका–कविचन्द्रकृत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ पाण्डुलिपि सम्पादन एवं समीक्षण (यंत्रस्थ)

पूजा

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Pooja
Title	Prof. Hari Dutt Sharma Ki Natyakritio Mein Yugchetana : Ek Adhyayann
Paper/Submission ID	3736140
Submitted by	profvkgupta@uprtou.ac.in
Submission Date	2025-06-05 12:19:10
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

पूजा

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	2	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
	Paper Submitted to Banaras Hindu University	<1	Student Paper
	hi.wikipedia.org	<1	Internet Data

पूजा